Dr. Keerti Kumari
Asstt Prof (Guest)
Deptt of Psychology
S.R.A.P. College, Barachakia, East Champaran
(A constituent unit of B.R.A. Bihar University Muzaffarpur)
Subject - Psychology
Topic - Topographical aspect of mind.
Class - B.A Part I (Hons) II Second paper
Day - Wednesday
Date - 23/02/2022
Period - 2nd
Contact no - 9801466117

प्रश्न - मन के आकारात्मक पहलुओं का वर्णन करें ?

अथवा

चेतन, अर्द्धचेतन एवं अचेतन में भेद करें।

– Describe the Topographical aspects of mind ?

Ans - मन आकृति व स्थान रूपरेखीय पहलू :- इदम्, अहम् पराहम्, अहम् का संबंध मन के चेतन, अचेतन या अवचेतन स्तर पर हो सकता है। फ्रायड ने अचेतन, अवचेतन व चेतन को मन का स्थल रूपरेखीय पहलू कहा है।

मन की संरचना

- गत्यात्मक पहलू
  - इदम्
  - अहम्
  - पराहम्
- स्थल रूपरेखीय पहलू
  - चेतन
  - अवचेतन
  - अचेतन

इसे चेतन स्तर भी कहते हैं। फ्रायड ने इन तीनों स्तरों में से अचेतन की अधिक विस्तृत खोज की है। नीचे हम इन तीनों की समुचित व्याख्या प्रस्तुत करते हैं।

1. चेतन - चेतना का सम्बन्ध वर्तमान से होता है। यह मन का वह स्तर है जहाँ पर हम अपने अतीत के अनुभव, भाव, विचारों, परिस्थितियों धारणाओं आदि स्मरण में लाते हैं। जे० एफ० ब्राउन के शब्दों में "फ्रायड के अर्थ में चेतन मन का वह भाग जो कि तात्कालिक ज्ञान से जुड़ा है" चेतन मन के कई उदाहरण हमारे दैनिक जीवन में मिलते हैं। जैसे परीक्षा भवन में विद्यार्थी प्रश्न का उत्तर लिखता है क्योंकि उसे उत्तर सामने ही का ज्ञान होता है

1. अवचेतन - 19 वीं शताब्दी के मानसिक प्रतिक्रियाओं को समझने के लिए चेतन मन को ही जानने का प्रयास किया जाता था। परन्तु 20 वीं शताब्दी में लोगों का ध्यान अवचेतन व चेतन प्रक्रियाओं की ओर गया। अवचेतन के सम्बन्ध में आधुनिक दृष्टिकोण मुख्यतः अग्रांकित सिद्धान्तों के परिणामस्वरूप प्राप्त हुआ।

(क) द्वि-मन सिद्धान्त :- इस सिद्धान्त का प्रतिपादन थॉमसन जे. हडसन ने किया था। इनके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति में दो मन होते हैं

1- बाह्य मन - objective mind
2. विषयगत मन - subjective mind.

इन दोनों की प्रकृति, गुण, प्रक्रियाएँ भिन्न-भिन्न होती हैं। इनका एक दूसरे पर प्रभाव अवश्य पड़ता है। बाह्य मन का ज्ञान ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा होता है जबकि विषयगत मन की जानकारी अन्तर्ज्ञान के द्वारा होता है। बाह्य मन में समानता होती है जबकि विषयगत मन में एक विशेष प्रकार का होता है। वास्तव में हडसन की द्वि मन सिद्धान्त वैज्ञानिक नहीं है क्योंकि मन का विभाजन नहीं किया जा सकता है क्योंकि द्वि मन इसके अनेक पक्ष होते हैं।

(ख) पारा सीमान्त दृष्टिकोण :- इस दृष्टिकोण के अनुसार अवचेतन व्यक्तिगत चेतन मन से पृथक है। सामान्यतः चेतना को दो भागों में बाँटा जा सकता है। केन्द्रिय भाग तथा सीमान्त भाग। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक जेम्स का कहना है कि सीमान्त भाग चेतना का केन्द्र है। अवचेतना भी इसी "चेतना के केन्द्र" का विस्तार है जिसके विचार स्थित रहते हैं तथा इसी कारण से किसी भी समय चेतन मन में प्रवेश कर सकते हैं।

अवचेतन के सम्बन्ध में उपर्युक्त दृष्टिकोण वास्तव में पूर्ण रूप से वैज्ञानिक नहीं है। सम्बन्ध के पूर्ण वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रदान करने का श्रेय फ्रायड को है — अतः अवचेतना के बारे में कहा गया है। अवचेतन मन का वह भाग है जिसमें ऐसी इच्छाएँ एवं विचार निहित रहते हैं जिनका प्रत्यावाहन किया जा सकता है।